



Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies

Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X

Pg. 76 - 81



गोरखपुर मण्डल के आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

कु० सुमन पासवान, शोध छात्रा

शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

प्रो० सुनीता दूबे

अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

Accepted: 14/07/2025

Published: 17/07/2025

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में "गोरखपुर मण्डल के आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन" किया गया है। शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार परिकल्पनाएँ आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धि व आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है का प्रतिपादन किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध जनसंख्या के रूप में गोरखपुर मण्डल के आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा-11वीं के छात्रों को सम्मिलित किया गया है तथा सम्भाव्य प्रतिदर्श विधि के अन्तर्गत स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों के सभी छात्रों को क्रमशः 100 एवं 100 लिया गया है अर्थात् कुल 200 छात्रों का चयन किया गया है।

मुख्य शब्दः: उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शैक्षिक उपलब्धि, आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालय

प्रस्तावना :-

शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। विद्यार्थी इस प्रक्रिया में उद्भव से अवसान तक शनैः शनैः निरन्तर ज्ञान, अनुभवों कौशलों एवं रूचि, योग्यता, वातावरण, सुविधा आवश्यकता तथा परिस्थितियों के अनुसार सीखता एवं अर्जित करता जाता है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यालय, अकादमिक प्रदर्शन या अकादमिक उपलब्धि एक छात्र शिक्षक या संस्थान ने अपने छोटे या दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त किया है। डिप्लोमा और स्नातक की डिग्री जैसे शैक्षिक उपाधियों को पूरा करना शैक्षणिक उपलब्धि का प्रतिनिधित्व करता है। शैक्षणिक उपलब्धि को आमतौर पर परीक्षाओं या निरन्तर आकलन के माध्यम से मापा जाता है।

उपलब्धि विद्यालय से विषय सम्बंधी अर्जित ज्ञान का परीक्षण है। इस परीक्षण से शिक्षक यह ज्ञात कर सकता है कि विद्यार्थी ने कितनी उन्नति की है। विद्यार्थी ने किस सीमा तक विषय सम्बंधी ज्ञान प्राप्त किया है।

भारत की विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण स्थान नवोदय एवं आश्रम पद्धति विद्यालयों के उच्चतर माध्यमिक स्तर का है। इस स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर उनके क्षेत्र का निर्धारण होता है तथा उनकी सफलता एवं असफलता का अनुभव भी लगाया जा सकता है।

बालक के बहुमुखी व्यक्तित्व को विकसित करने एवं उसको सम्पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्यालय सर्वश्रेष्ठ स्थान है जहाँ विद्यार्थियों के भविष्य का निर्माण किया जाता है।

समाज की शिक्षा व्यवस्था में विद्यालयी शिक्षा का सशक्त औपचारिक साधन के रूप में महत्वपूर्ण स्थान है विद्यालय एक विशिष्ट स्थान है जहाँ बच्चे को वांछित विकास करने के लिए जीवन से जुड़ी क्रियाएं एवं अवसर प्रदान किये जाते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 से भारत के विभिन्न राज्यों के प्रत्येक जिले में नवोदय विद्यालयों की स्थापना किया गया, जो केन्द्र सरकार द्वारा संचालित की जाती है।

नवोदय विद्यालयों के अनुरूप राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक जिले में आश्रम पद्धति विद्यालयों की स्थापना की गयी।

उद्देश्य :-

1. आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालकों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :-

1. आश्रम पद्धति एवं जवाहर नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।
2. आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालकों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।
3. आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

संक्रियात्मक परिभाषा

आश्रम पद्धति विद्यालय

भारत सरकार द्वारा संचालित एक विशेष आवासीय शिक्षा योजना है जिसका उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, विमुक्त जाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रतिभाशाली छात्रों को गुणवत्तापूर्ण और निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना है।

उत्तर प्रदेश में समाज कल्याण विभाग द्वारा 94 से अधिक राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय संचालित किये जा रहे हैं। इनमें 45 विद्यालय CBSE बोर्ड से और शेष 49 उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद प्रयागराज से संबद्ध है।

नवोदय विद्यालय :-

जवाहर नवोदय विद्यालय की स्थापना 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत पूर्व प्रधानमंत्री स्व० श्री राजीव गांधी जी के द्वारा किया गया था। इसका प्रबन्धन नवोदय विद्यालय समिति (स्वायत्त संस्था) शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन है।

- ग्रामीण प्रतिभाशाली छात्रों को आधुनिक, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
- राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना।
- सामाजिक न्याय और समानता सुनिश्चित करना।

शैक्षिक उपलब्धि -

शैक्षिक उपलब्धि वे हैं जिनकी सहायता से विद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले विषयों और सिखाए जाने वाले कौशलों में विद्यार्थियों की सफलता अथवा उपलब्धियों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

शोध समस्या का परिसीमन -

- प्रस्तुत शोध कार्य गोरखपुर मण्डल तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध कार्य में कक्षा-11वीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल आश्रम पद्धति एवं जवाहर नवोदय विद्यालयों तक सीमित है।

शोध विधि :- प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध समग्र :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में गोरखपुर मण्डल के आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा-11वीं के सभी छात्र-छात्राएं जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किये गये हैं।

प्रतिदर्श :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में गोरखपुर मण्डल के आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा-11वीं के 200 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत समानुपातिक यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि के द्वारा किया गया है।

प्रतिदर्श तालिका संख्या-01

क्र.स.	समूह	विद्यार्थी वर्ग	संख्या
1.	आश्रम विद्यालय	कक्षा-11वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	100
2.	नवोदय विद्यालय	कक्षा-11वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक	100

	उपलब्धि	
	कुल	200

प्रतिदर्श चयन विधि :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिदर्श चयन हेतु सम्भाव्य प्रतिदर्श विधि के अन्तर्गत स्तरीकृत समानुपातिक यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि का प्रयोग प्रतिदर्श के चयन हेतु किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :- शोध अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु गोरखपुर मण्डल के आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालय के अध्ययनरत कक्षा-11 के विद्यार्थियों के विगत वार्षिक परीक्षा परिणाम के कुल प्राप्तांकों को प्रतिशत के रूप में लिया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है- (1) मध्यमान (2) मानक विचलन (3) क्रान्तिक अनुपात

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 01 :- आश्रम पद्धति एवं जवाहर नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

$$H_0 : M_1 = M_2$$

$$H_1 : M_1 \neq M_2$$

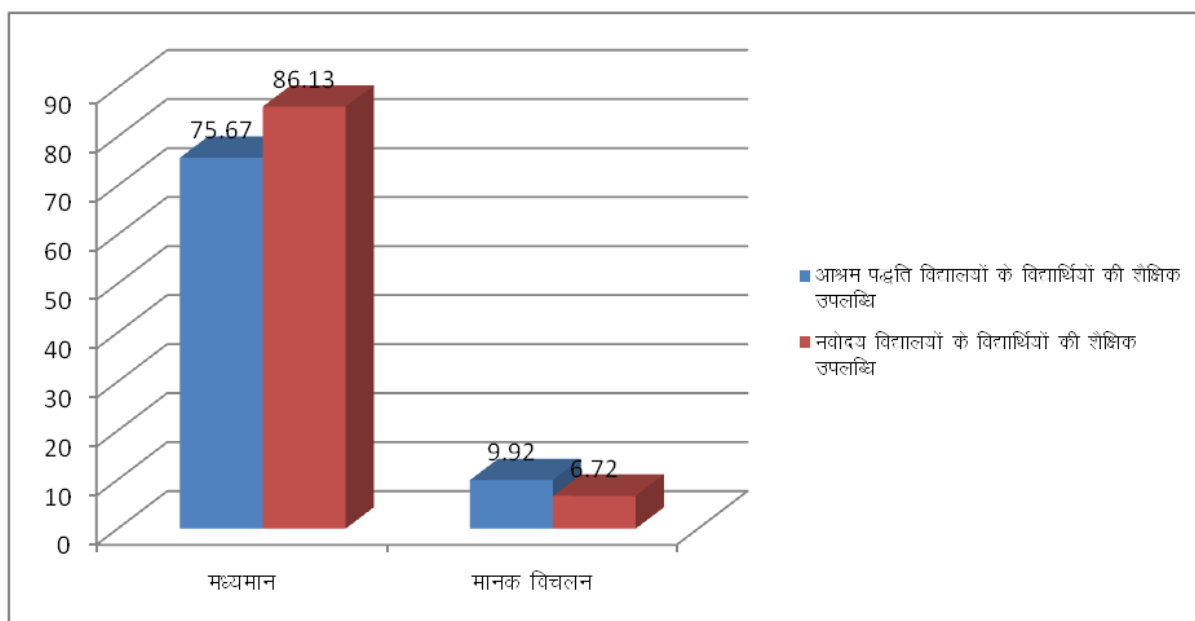
तालिका संख्या- 01

आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि	मध्यमानों में अन्तर	मध्यमान की अन्तर की त्रुटि	क्रांतिक अनुपात का मान	सार्थकता स्तर	
								0.05	0.01
आश्रम पद्धति विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	100	75.67	9.92	99	10.47	1.19	8.73	सार्थक अन्तर है।	सार्थक अन्तर है।
नवोदय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	100	86.13	6.72	0.67					

आरेख संख्या-01

आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों हेतु मध्यमान तथा मानक विचलन को दर्शाता हुआ आरेख



व्याख्या :- तालिका संख्या 01 के अवलोकन से स्पष्ट है कि आश्रम पद्धति विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 75.67 एवं 86.13 तथा मानक विचलन क्रमशः 9.92 एवं 6.72 है जबकि मध्यमान प्राप्तियों में अन्तर 10.47 एवं अन्तर की त्रुटि 1.19 है।

गणना के उपरान्त दोनों समूहों के मध्य परिगणित क्रांतिक अनुपात 8.73 है जो 0.5 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा सार्थकता स्तर 0.01 के मान 2.58 से अधिक है।

इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है जो यह प्रदर्शित करता है कि

आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आश्रम पद्धति विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बेहतर है।

परिकल्पना 02 :- आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

$$H_0 : M_1 = M_2$$

$$H_1 : M_1 \neq M_2$$

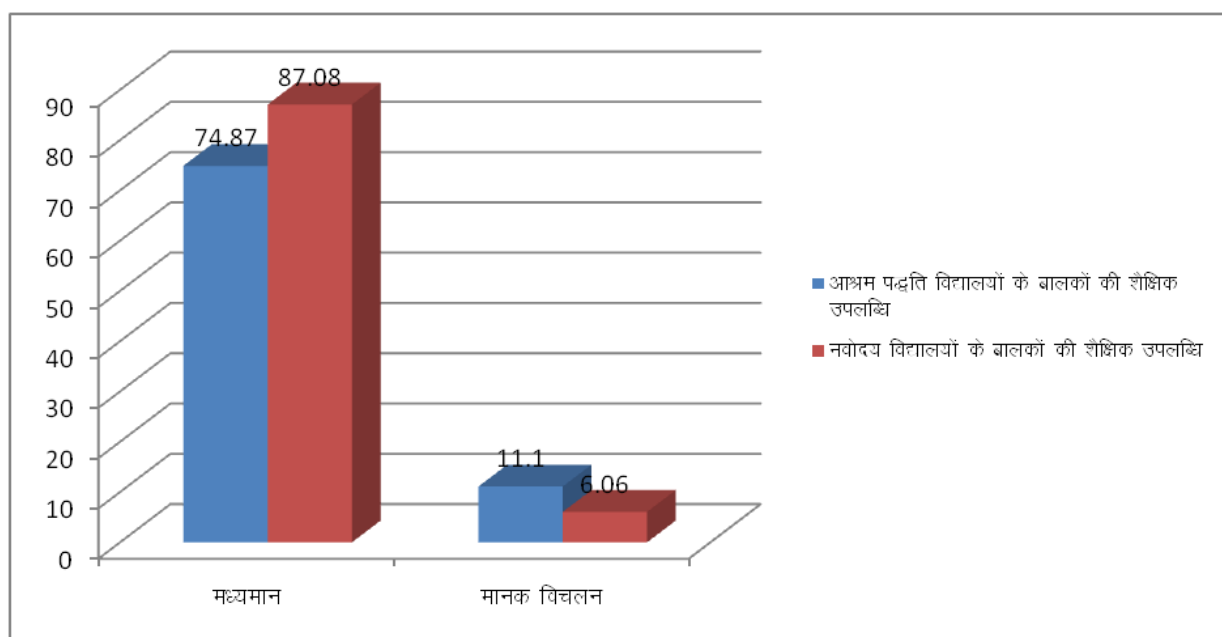
तालिका संख्या-02

आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि	मध्यमानों में अन्तर	मध्यमान की अन्तर की त्रुटि	क्रांतिक अनुपात का मान	सार्थकता स्तर	
								0-05 1-96	0-01 2-58
आश्रम पद्धति विद्यालयों के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि	50	74.87	11.10	1.57	12.20	1.78	6.85	सार्थक अन्तर है।	सार्थक अन्तर है।
नवोदय विद्यालय के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि	50	87.08	6.06	0.86					

आरेख संख्या-02

आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धि हेतु मध्यमान तथा मानक विचलन को दर्शाता हुआ आरेख



व्याख्या :- तालिका संख्या 02 के अवलोकन से स्पष्ट है कि आश्रम पद्धति विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 74.87 एवं 87.08 तथा मानक विचलन क्रमशः 11.10 एवं 6.06 है जबकि मध्यमान प्राप्तांकों में अन्तर 12.20 एवं अन्तर की त्रुटि 1.78 है। गणना के उपरान्त दोनों समूहों के मध्य परिगणित क्रांतिक अनुपात 6.85 है जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा सार्थकता स्तर 0.01 के मान 2.58 से अधिक है।

इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है जो यह प्रदर्शित करता है कि

आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आश्रम विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धि बेहतर है।

परिकल्पना 03 :- आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

$$H_0 : M_1 = M_2$$

$$H_1 : M_1 \neq M_2$$

तालिका-03

आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि	मध्यमानों में अन्तर	मध्यमान की अन्तर की त्रुटि	क्रांतिक अनुपात का मान	सार्थकता स्तर	
								0-05 1-96	0-01 2-58
आश्रम पद्धति विद्यालयों के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि	50	70.02	12.30	1.74	9.83	3.75	2.62	सार्थक अन्तर है।	सार्थक अन्तर है।
नवोदय विद्यालय के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि	50	79.85	6.017	.85					

व्याख्या :- तालिका संख्या 03 के अवलोकन से स्पष्ट है कि आश्रम पद्धति विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 70.02 एवं 79.85 तथा मानक विचलन क्रमशः 12.30 एवं 6.017 है जबकि मध्यमान प्राप्तांकों में अन्तर 9.83 एवं अन्तर की मानक त्रुटि 3.75 है।

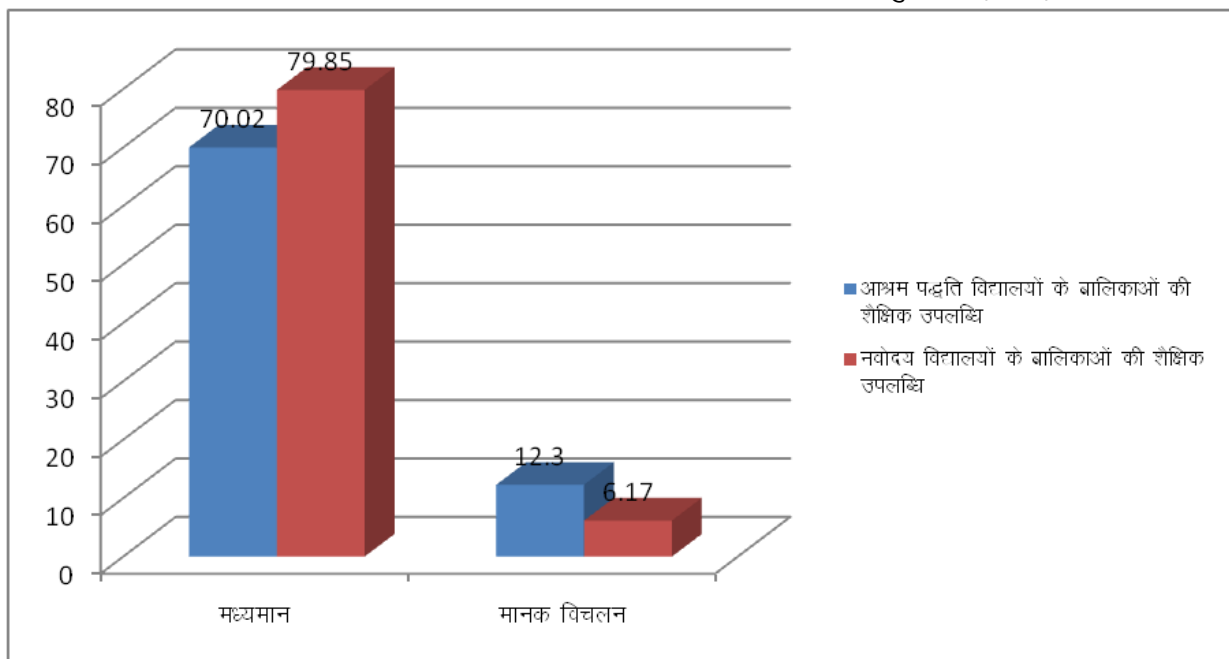
गणना के उपरान्त दोनों समूहों के मध्य परिगणित क्रांतिक अनुपात का मान 2.62 है जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा सार्थकता स्तर 0.01 के मान 2.58 से अधिक है।

इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है जो यह प्रदर्शित करता है कि आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आश्रम पद्धति विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धि बेहतर है।

आरेख संख्या-03

आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि हेतु मध्यमान तथा



मानक विचलन को दर्शाता हुआ आरेख

शैक्षिक निहितार्थ :- आश्रम पद्धति एवं नवोदय विद्यालय क्रमशः दोनों ही राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार द्वारा संचालित विशेष प्रकार के आवासीय शैक्षणिक संस्थान हैं जिनका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना है विशेषकर ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों के प्रतिभावान विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना है। आज के प्रतिस्पर्धा के दौर में विद्यार्थी अपने बुद्धि स्तर एवं आत्म विश्वास एवं परिश्रम के द्वारा अच्छी शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकेंगे एवं शिक्षकों का कर्तव्य है कि विद्यार्थियों को समय-समय पर विद्यालयों में आयोजित होने वाले पाठ्य-सहगामी क्रियाओं एवं विभिन्न महापुरुषों के जयन्तियों जैसे-गाँधी जयंती, अम्बेडकर जयन्ती, शिक्षक दिवस, बाल दिवस एवं राष्ट्रीय पर्व आदि ऐसे विविध कार्यक्रमों का आयोजन कराना चाहिए जिससे विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने से विद्यार्थियों में उचित गुणों का विकास हो सके। विद्यार्थियों में नैतिक गुणों के आधार पर विद्यालय एवं परिवार में समायोजित होकर राष्ट्र के प्रति भक्ति की भावना एवं आदर्शवादी विचारधारा को अपनाकर एक सुयोग्य नागरिक के कर्तव्यों का निर्वहन कर सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, आर0ए0 (2011), 'शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया' आर0 लाल बुक डिपो मेरठ
2. भटनागर सुरेश (2011), 'भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास' आर0 लाल बुक डिपो मेरठ
3. गुप्ता एस0पी0 एवं अल्का गुप्ता (2017), 'उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धान्त एवं व्यवहार' प्रयागराज शाखा पुस्तक भवन
4. सिंह अरूण कुमार (2017), 'मनोविज्ञान,

समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ' 12वाँ संशोधित संस्करण

5. पाण्डेय के0पी0 (2018), 'शैक्षिक अनुसंधान', 15वाँ संस्करण वाराणसी: विश्वविद्यालय, प्रकाशन
6. Kothari C.R., 'Research Methodology methods and Techniques' (Secound Revised edition)
7. Best J.W. (2011), 'Research in education' 10th edition New York: Prentice Hall Ins. 2011
8. Buch M.B., 'Survey of Research in education in India', NCERT, New Delhi.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.
